आतंकवाद

21 वी शताब्दी की विश्व राजनीति में आतंकवाद की समस्या राष्ट्र-राज्यों की सुरक्षा के लिए गम्भीर खतरा बन चुकी है। आतंकवाद को परिभाषित करते हुए वुल्फ स्वं कोलम्बस ने कहा ये ऐसे गैर-राज्यीय कर्ता है- जो हिंसा की गैर परम्परागत तकनीकी का प्रयोग करते है जिससे इनके राजनीतिक उद्देश्यों की पूर्ति हो। केली और स्मिथ के अनुसार आतंकवाद मुख्य रूप मे हिंसा का संगठित प्रयोग है और हिंसा के इस प्रयोग मे लोगों का अपहरण, विमान का अपहरण तथा बम विस्फोट किया जाता है और ऐसी हिंसा मे सामान्यत: आम नागरिकों को निशाना बनाया जाता है। उनके अनुसार हिंसा के उद्देश्यों में मतभेद पाया जाता है लेकिन हिंसा का आधार राजनीतिक होता है और हिंसा के प्रयोग का मूल कारण एक समूह की पीड़ा

Scanned with CamScanner

की ओर समूचे समुदाय का ध्यान आकर्षित करना है.

विटकॉफ के अनुसार आतंकवाद नया नहीं है लेकिन वर्तमान सूचना क्रान्ति एवं भूमण्डलीकरण के युग में आतंकवादियों के प्रभाव में अत्यधिक वृद्धि हुई है।

दुनिया के कुछ मुख्य आतंकवादी संगठन

1. लीबिया का अबू निदाल, जो मुख्यतः अन्तर्राष्ट्रीय रूप में विभिन्न मुस्लिम आतंकवादी समूहों के मध्य समन्वय का कार्य करता है.

2. सशस्त्र इस्लामिक समूह अल्जीरिया, जिसका मूल उद्देश्य अल्जीरिया के पंथ निरपेक्ष शासन के स्थान पर इस्लामी शासन को स्थापित करना है.

3. स्पेन का बास्क फादरलैण्ड एण्ड लिबर्टी, जो मार्क्सवादी विचारधारा के प्रति कटिबद्ध है और जिसका मूल उद्देश्य बास्क को एक स्वतन्त्र राज्य के रूप में विकसित करना है.

4. हमास, 1987 में स्थापित हमास का मूल उद्देश्य इजरायल के स्थान पर एक इस्लामी फिलीस्तीनी राष्ट्र का निर्माण करना है.

5. हिजबुल्ला, यह मुख्यतः अतिवादी शिया समूह है जिसका मूल उद्देश्य लेबनान में ईरान की भाँति इस्लामी राज्य की स्थापना करना है.

Scanned with CamScanner

6. काच और काहने चाई : यह इजरायल का आतंकवादी संगठन है जिसका मूल उद्देश्य फिलीस्तीनियों के साथ इजरायल की शान्ति वार्ता को रोकना है.

7. आयरिश रिपब्लिकन आर्मी, जिसका मूल उद्देश्य उत्तरी आयरलैण्ड को आयरलैण्ड के साथ संयुक्त करना है. इसकी स्थापना 1969 में हुई.

8. पेरू का शाइनिंग पाथ, जिसका मूल उद्देश्य गुरिल्ला संघर्ष के द्वारा पेरू से विदेशियों को निष्कासित करना है और किसानों के क्रान्तिकारी शासन को स्थापित करना है.

9. लिट्टे (L.T.T.E.), श्रीलंका का आतंकवादी संगठन जिसका निर्माण 1980 के दशक में हुआ. इसका मूल उद्देश्य तमिलों के लिए एक स्वतन्त्र राज्य का निर्माण है.

10. पाकिस्तान स्थित लश्कर ए तोयबा और जैश ए मोहम्मद जो मूलतः भारत के कश्मीर राज्य में आतंकवादियों को समर्थन प्रदान करते हैं.

11. अल-कायदा, इसका प्रभाव सम्प्रति विश्वव्यापी है और अलकायदा आतंकवाद और जेहाद का प्रयोग एक-दूसरे के पर्यायवाची के रूप में किया जाता है अल कायदा की स्थापना अब्दल्ला अज्जाम ने 1987 में की. बाद में इसका नियन्त्रण ओसामा बिन लादेन ने सम्भाला और 11 सितम्बर 2001 के आक्रमण के

Scanned with CamScanner

पश्चात अलकायदा का प्रभाव प्रत्येक राज्यों की सुरक्षा के लिए एक बड़ी चुनौती बन गया है अलकायदा के मुख्य प्रशिक्षण आधार सूडान, यमन, चेचन्या, तजाकिस्तान, सोमालिया और फिलीपीन्स। अलकायदा का नेटवर्क ब्रिटेन, फ्रांस, नीदरलैण्ड, बेल्जियम, इटली, स्पेन, जर्मनी, मिस्र, अल्जीरिया, यमन, इराक, सूडान, थाइलैण्ड, म्यांमार, जापान, कोरिया, सिंगापुर, भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश सभी देशों में पाया जाता है।

आतंकवाद के प्रकार — आतंकवादी संगठनों को अनेक श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है।

1. सीमा पार आतंकवाद — इसके अन्तर्गत एक राष्ट्र में आतंकवादी संगठन प्रशिक्षण प्राप्त करके दूसरे राज्यों में गतिविधियाँ संचालित करते है उदाहरण के लिए जैश ए मोहम्मद जैसे पाकिस्तानी आतंकवादी संगठन, जिनकी उत्पत्ति पाकिस्तान में है, इन्हे पाकिस्तान में प्रशिक्षित भी किया जाता है तथा पाकिस्तानी सरकार द्वारा इनका समर्थन भी किया जाता है।

2. राज्य प्रायोजित आतंकवाद — अमरीकी विदेश मन्त्रालय के अनुसार लीबिया जैसे राष्ट्र, सूडान जैसे राष्ट्र मुख्यत: आतंकवाद प्रायोजित करने वाले राष्ट्र है। पाकिस्तान द्वारा सीमा पार आतंकवाद भी राज्य द्वारा प्रायोजित आतंकवाद का ही एक उदाहरण

Scanned with CamScanner

है।

3. राज्य आतंकवाद

विटकॉफ के अनुसार राज्य आतंकवाद का प्रयोग उन लोगों के विरुद्ध किया जाता है जो सरकार का विरोध करते है। राज्य आतंकवाद और आतंकवाद के मध्य अन्तर भी किया जा सकता है। अचिन विनायक के अनुसार राज्य आतंकवाद किसी भी हिंसात्मक कार्यवाही का उत्तरदायित्व नहीं लेता जब कि सामान्यत: आतंकवादी संगठन अपने कार्यों का उत्तरदायित्व लेते है। आतंकवादी संगठन हिंसा का प्रयोग प्रचार एवं प्रसार के लिए करते है जबकि राज्य द्वारा प्रयुक्त हिंसा प्रचार-प्रसार के लिए नहीं होती।

कुर्थ क्रोनिन के अनुसार आतंकवादी संगठन निम्नलिखित प्रकार के होते है -

1. वामपंथी आतंकवादी संगठन, उदा० के लिए स्पेन का बास्क संगठन
2. दक्षिणपंथी आतंकवादी संगठन, उदा० इजरायल का आतंकवादी संगठन,
3. नृ-जातीय, राष्ट्रवादी और अलगाववादी संगठन उदा० लिट्टे
4. धार्मिक आतंकवादी संगठन, उदा० अलकायदा, हमास, हिजबुल्ला,

Scanned with CamScanner

आतंकवाद वैश्विक घटना के रूप में –

आतंकवाद सर्वथा नवीन संकल्पना नहीं है बल्कि विटकॉफ के अनुसार यह तो रोमन काल से ही विद्यमान है लेकिन 1968 के पश्चात आतंकवाद का प्रभाव में अत्याधिक तीव्र गति से वृद्धि हुई जिसके तीन कारण है –

1. वायु सेवाओ में तेजी से विस्तार
2. विश्व में टेलीविजन समाचार का व्यापक प्रभाव (संचार क्रांति का व्यापक प्रभाव)
3. समान राजनीतिक और वैचारिक हित

उपरोक्त कारणों से आतंकवाद स्थानीय और क्षेत्रीय घटना की बजाए एक वैश्विक खतरा बन गया क्योंकि तत्कालीन समय में वायु यानाओं में सुरक्षा अनुपस्थित थी इसी लिए इन्होने अपनी मांगों को पूर्ण कराने के लिए विमानों के अपहरण का सहारा लिया और इसमें इतनी तीव्रता से वृद्धि हुई कि 1966 में पाँच अपहरण की घटना हुई और यह 1969 में बढकर 94 हो गयी। दूसरी ओर विभिन्न आतंकवादी संगठनों में पहले बहुत कम सम्पर्क था लेकिन संचार क्रान्ति के प्रभावी होने से इनमें आपसी सम्पर्क भी तीव्र हुआ।

अपहरण की घटनाओं को सीधा टेलीविजन पर दिखाने से आतंकवादी संगठनों को अत्याधिक लोकप्रियत प्राप्त हुई। जैसे 1972 की म्यूनिख ओलम्पिक घटना, 1970 में फिलीस्तीनियों द्वारा विमान के अपहरण को

Scanned with CamScanner

टेलीविजन पर दिखाया गया इसलिए वेली और स्मिथ की यह मान्यता है कि मीडिया प्रचार आतंकवाद को जीवित रखने के लिए ऑक्सीजन का काम करता है। आतंकवादी संगठन अपने प्रचार-प्रसार को बढाने के लिए सदैव प्रयत्नशील होते हैं और अपनी गतिविधियों को संचालित करने में इनका यह भी प्रयत्न होता है कि इनकी मांगों को वैधता भी प्राप्त होती रहे इसीलिए आतंकवादी संगठन व्यापक नरसंहार के हथियारों का प्रयोग नहीं करते और रासायनिक जैविक हथियारों का भी प्रयोग नहीं करते। 1979 की इस्लामी क्रान्ति के पश्चात अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद को महत्वपूर्ण समर्थन प्राप्त हुआ और ईरान ने पश्चिम एशिया में फिलीस्तीन का समर्थन किया और अब आतंकवादी संगठनों ने अमरीकी मित्रों और अमरीकी सहायताकारों पर आक्रमण किया। 1980 - 90 के मध्यकाल को आतंकवाद का दशक कहा गया और इस काल में इस्लामी जेहादी संगठनों ने अमरीका के अनेक ठिकानों पर आक्रमण किया।

शीतयुद्ध की अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में महाशक्तियों ने भी आतंकवादी संगठनों का प्रयोग किया उदा० के लिए सोवियत संघ द्वारा अफगानिस्तान में हस्तक्षेप

के पश्चात अमरीका ने सोवियत संघ के विरुद्ध जेहादी तत्वों का समर्थन किया।

सोवियत संघ के विघटन और शीत युद्ध के अन्त के पश्चात वामपंथी आतंकवादी संगठनों को अब सहायता प्राप्त होनी बन्द हो गयी लेकिन शीतयुद्धोत्तर युग में वैचारिक रूप में आतंकवादी संगठनों का प्रभाव कम हो रहा है तो दूसरी ओर अल कायदा जैसे विश्वव्यापी आतंकवादी संगठन उभर रहे हैं। यह अत्यन्त दिलचस्प एवं संयोग का बिन्दु है कि अमरीका ने जिन आतंकवादी संगठनों को सहायता प्रदान की थी आज वह उन्हीं के विरुद्ध संघर्षरत है।

आतंकवाद की उत्पत्ति के मूल कारण—

1. सांस्कृतिक— भू-मण्डलीकरण के युग में सम्पूर्ण विश्व में पाश्चिमी विश्व के सामानों और उत्पादों का प्रभाव बढ़ रहा है जब कि कुछ समुदाय अपनी परम्पराओं और मूल्यों की रक्षा के लिए सशस्त्र संघर्ष कर रहे हैं। क्योंकि पाश्चिमी पंथ निरपेक्ष भौतिकवादी संस्कृति की बजाए वे अपनी सांस्कृतिक पहचान अक्षुण्य रखना चाहते है। वैश्विक पूँजीवाद के युग में जिसमें मुक्त व्यापार को बढ़ावा दिया जा रहा है अनेक समूहों के समक्ष अपनी पहचान के संकट का खतरा उत्पन्न हो गया है और वे अपनी पहचान को दूसरों से अलग

Scanned with CamScanner

बनाये रखने और अपनी धार्मिक एवं नृजातीय पहचान के लिए संघर्ष कर रहे हैं। हंटिंग्टन ने विश्व में सभ्यताओं के संघर्ष को स्वीकार किया और उनकी मान्यतानुसार आने वाली दुनिया में यह संघर्ष अनेक सभ्यताओं के मध्य होगा लेकिन मूलतः ईसाइयत और इस्लाम के मध्य संघर्ष होगा। इस संघर्ष का मूल कारण व्याक्तियों की यह मान्यता है कि सभ्यताओं के दौर में उनकी सभ्यता अशक्त हो रही है। खाड़ी युद्ध (1990) के बाद से पाश्चिमी एशियाई देश विशेष रूप में पाश्चिमी देशों के खाड़ी में सैन्य उपास्थिति से आशंकित हैं।

हंटिंग्टन की मान्यता की आलोचना भी की जाती है क्योंकि पूरी इस्लामी दुनिया में ऐसी एकरूपता नहीं पायी जाती जैसा हंटिंग्टन ने वर्णित की है क्योंकि इस्लामी राज्यों में भी शिया, सुन्नी का विवाद है तथा इनमें भी अरबी और गैर-अरबी लोगों में मतभेद पाया जाता है। ओसामा बिन लादेन के अनुसार जो लोग कुरान में विश्वास नहीं करते या जो लोग कुरान की व्याख्या को स्वीकार नहीं करते वे इस्लामी संस्कृति के पतित होने के उत्तरदायी हैं।

Scanned with CamScanner

1. **आर्थिक कारण** — आतंकवाद के अनेक कारणों में आर्थिक कारक भी महत्वपूर्ण है क्योंकि आर्थिक कारकों की वजह से आतंकवादी संगठन राजनीतिक परिवर्तन का समर्थन करते हैं। वर्तमान भूमण्डलीकरण एवं वैश्वीकरण के युग में पाश्चात्य विश्व ने नया साम्राज्यवाद स्थापित कर लिया है, वर्तमान भूमण्डलीकरण के युग में पाश्चात्य देशों का तकनीकी पूँजी एवं मुख्य संस्थाओं पर भी नियन्त्रण है जैसे अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व बैंक जैसी संस्थाओं पर पाश्चिमी देशों का नियन्त्रण है, अतः विश्व में संसाधनों का वितरण असमान है और सामाजिक विषमता में भी व्यापक वृद्धि हो रही है इस लिए व्यक्ति एवं व्यक्ति समूह हिंसात्मक गतिविधियों में संलग्न हो रहे हैं क्योंकि जीवन स्तर में वृद्धि हो रही है, शिक्षा दर बढ़ रही है लेकिन रोजगार का अभाव है अतः फ्रैंज फैनान के शब्दों में शोषणकारी व्यवस्था के विरुद्ध तब तक संघर्ष जारी रहेगा जब तक पाश्चिमी विश्व और शेष दुनिया के मध्य आर्थिक एवं शक्ति का असन्तुलन व्याप्त होगा इस लिए कुछ लोगों की मान्यता के अनुसार 11 सितम्बर 2001 को W.T.C. पर किया गया आक्रमण अमरीका पर

Scanned with CamScanner

नहीं बल्कि विश्व पूँजीवाद के प्रतीक पर था.

इसलिए वर्तमान आतंकवादी घटनाओं के पीछे आर्थिक-विसंगतियाँ भी प्रमुख है यद्यपि यह कथन सभी परिस्थितियों में सत्य नहीं है क्योंकि जर्मनी के लाल-सेना के लोग अत्याधिक सम्पन्न है और अलकायदा से जुड़े अनेक आतंकवादी इंजीनियरिंग एवं मेडिकल शैक्षिक पृष्ठभूमि से है.

3. धार्मिक कारण (नया आतंकवाद) — (बेलीज/स्मिथ)

11 सितम्बर 2001 के पश्चात नये आतंकवाद को उत्तर आधुनिक आतंकवाद की संज्ञा भी दी जा रही है जिसमें आतंकवादियों की मूल अभिप्रेरणा धार्मिक कारणों से लोगों की हत्या करना है और वे लोग जो एक धर्म विशेष में आस्था नहीं रखते उन्हें हिंसा का निशाना बनाया जा रहा है इसी लिए नये आतंकवाद को मूलतः मुसलमानों की प्रतिक्रिया के रूप में व्यक्त किया जा रहा है क्योंकि मुसलमानों का विश्वव्यापी शोषण हो रहा है एवं पाश्चेमी दुनिया का आध्यात्मिक पतन हो रहा है भू-मण्डलीकृत विश्व - जो कि एक गाँव के रूप में उभर रहा है मुसलमानों के समक्ष मूल संकट दो रूपों में विद्यमान है:-

पहला, वे सम्पूर्ण विश्व स्वीकरण से सम्बान्धित हो

Scanned with CamScanner

द्वितीय, अपनी आध्यात्मिक शुद्धता बनाये रखने के लिए इससे संघर्ष करें. इसी लिए वे राष्ट्र जो पंथ-निरपेक्ष व्यवस्था को मानते हैं और इस्लामी राष्ट्र है वे भी इस्लामी आतंकवादियों के निशाने पर हैं इसमें मिस्र एवं पाकिस्तान प्रमुख राष्ट्र हैं मूलतः इस्लामी मान्यताकारों के अनुसार अपनी आत्मा की शुद्धता को बनाये रखने के लिए एवं समुदाय की रक्षा के लिए बलिदान आवश्यक है। आतंकवाद के इस नये स्वरूप में आत्मघाती व्यक्तियों को तैयार किया जा रहा है और वे अपनी कुर्बानी देने के लिए तैयार है क्योंकि उन्हें यह प्रेरणा दी जा रही है कि उन्हें इस पावित्र उद्देश्य के लिए त्याग ईश्वर के समीप पहुँचाएगा. इस लिए यदि व्यक्तिगत कुर्बानी आध्यात्मिक पावित्रता प्रदान करती है और स्वयं में साध्य है तो ओसामा बिन लादेन और अमन अल जवाहिरी जैसे व्यक्ति यह बलिदान क्यों नहीं देते.

केलीज और स्मिथ की यह मान्यता पूर्णतः स्वीकृत नहीं की जा सकती कि आतंकवाद का सम्बन्ध केवल एक धर्म विशेष से है.

Scanned with CamScanner

आतंकवाद का समाधान —

आतंकवाद को नियन्त्रित करने के लिए विश्व के अनेक देशों ने कड़े आतंकवाद विरोधी नियमों का निर्माण किया है, वायु अड्डों की सुरक्षा में वृद्धि की गयी है और विशेष सैन्य बलों और अर्द्ध सैन्य बलों का निर्माण किया गया है लेकिन एक राज्य द्वारा आतंकवाद को तभी नियन्त्रित किया जा सकता है जब अन्य देशों की सहायता भी उसे प्राप्त हो और इस सन्दर्भ में अन्तर्राष्ट्रीय विधि को प्रभावी करने की आवश्यकता है लेकिन मूल समस्या इन विधियों के क्रियान्वयन को लेकर है. अभी तक विश्व में आतंकवाद को नियन्त्रित करने के लिए हेग सम्मेलन (1970) के द्वारा वायुयानों के अवैध अपहरण के सन्दर्भ में कानून का निर्माण किया गया है, दूसरा सामूहिक प्रयास इण्टरपोल के द्वारा हुआ, इण्टरपोल ने जन सुरक्षा और आतंकवादी उपमुख्यालय का निर्माण किया है. 1979 में अपहरण को रोकने या बन्धक बनाने के विरु एक विधेय का निर्माण हुआ.

समकालीन विश्व में आतंकवादियों के मध्य आपस में अन्तर्सम्बन्ध बढ़ रहा है इसलिए इनको

Scanned with CamScanner

सामूहिक रूप में ही नियन्त्रित किया जा सकता है और अमरीका ने इसे नियन्त्रित करने के लिए आतंक के विरुद्ध युद्ध का नारा दिया है। आतंकवादियों के प्रभाव को कम करने के लिए उनके समर्थन को घटाने के लिए उनके वित्तीय स्रोतों को समाप्त करने के लिए एकीकृत रूप में कार्य करने की आवश्यकता है और 11 सितम्बर 2001 के पश्चात अनेक आतंकवादी संगठनों की सूची बनायी गयी है उनके वित्तीय लेन देन पर कड़ा नियन्त्रण रखा जा रहा है।

आतंकवाद का समाधान करने के लिए सैन्य बल का प्रयोग केवल अपवादिक परिस्थितियों में ही किया जाना चाहिए इसलिए आतंकवाद को नियन्त्रित करने का बेहतर तरीका वैधानिक है जिसके द्वारा नये विधि निर्माण की आवश्यकता है और लोकतान्त्रिक राज्यों को शक्तिशाली बनाकर भी आतंकवाद को अप्रभावशाली किया जा सकता है। आतंकवाद को नियन्त्रित करने में दो मुख्य समस्याएँ उपस्थित होती हैं

आतंकवादियों के अड्डों की पहचान करना और उन्हें अलग-थलग करना,

उनसे प्राप्त सूचनाओं का विश्लेषण करना जिससे भविष्य में आतंकवादी गतिविधियों को नियन्त्रित किया जा सके।

Scanned with CamScanner

संयुक्त राष्ट्र संघ ने वैश्विक आतंकवाद को समाप्त करने के लिए प्रस्ताव संख्या 1373 पारित किया और आतंकवाद का समाधान आवश्यक है क्योंकि इसके द्वारा किसी एक राज्य विशेष की सुरक्षा को ही खतरा नहीं अपितु समूचे विश्व की शान्ति व सुरक्षा के लिए खतरा है।

भारत और आतंकवाद वस्तुतः भारतीय विदेश नीति विगत तीन दशकों से आतंकवाद का शिकार है। 80 के दशक में पंजाब में आतंकवादियों को सीमा पार से प्रोत्साहित किया गया और इसी समय पाकिस्तान ने कश्मीर में आतंकवादियों को प्रायोजित किया गया इस लिए भारत मुख्यतः पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित सीमा पार आतंकवाद का शिकार है क्योंकि पाकिस्तानी रणनीति दोहरी है क्योंकि एक तरफ वह भारत से वार्तालाप कर रहा है तो दूसरी ओर वह आतंकवादियों को समर्थन भी देता है लेकिन भारतीय नीति आतंकवाद के प्रति जीरो टोलरेन्स (Zero Talerance) की नीति है और 11 सितम्बर 2001 के पश्चात दिसम्बर 2001 में भारतीय संसद पर भी हमला हुआ और सितम्बर घटना के

Scanned with CamScanner

पश्चात पूरी दुनिया ने भारत में सीमा पार आतंकवाद को समाप्त करने के लिए पाकिस्तान पर दबाव बनाया. पाकिस्तान द्वारा चलाये जा रहे भारत में सीमा पार आतंकवाद की मूल विशेषताएँ निम्न लिखित हैं -

(1) आतंकवादियों के माध्यम से भारत में हिंसा और अस्थिरता पैदा की जा रही है. विशेषकर जम्मू-कश्मीर में अस्थिरता पैदा करने का प्रयास है और इसके लिए आतंकवादी संगठन भारतीय सैन्य बलों पर भी हमला कर रहे हैं.

(2) भारत के आन्तरिक क्षेत्र में कार्यरत अनेक समूहों को हथियार और सहायता प्रदान की जाती है.

(3) नक्सलियों और उनसे सम्बान्धित समूहों को सहायता प्रदान की जाती है और आतंकवादी भारत के पुलिस, सैन्य एवं असैन्य बलों पर हमला करते है. भारत की आर्थिक आधारभूत संरचना को ~~विनाश~~ कर रहे है और ये आतंकवादी संगठन भारत में वित्तीय एवं हथियारों की सहायता भी प्रदान करते हैं.

(4) सीमा पार आतंकवादियों का मूल उद्देश्य भारत में उन्हें प्रशिक्षित करना और उत्तरी पूर्वी राज्यों में आतंकवादी अलगाववादी समूहों को भी सहायता प्रदान करना है.

Scanned with CamScanner

(5) भारत में साम्प्रदायिक हिंसा फैलाकर अव्यवस्था उत्पन्न करना है जिससे भारतीय संसाधन सामाजिक आर्थिक गतिविधियों में प्रयुक्त न हो सकें.

(6) आतंकवादियों का उद्देश्य संवेदनशील राज्य सरकार को अस्थिर करना है जिससे भारत में राजनीतिक एवं प्रशासनिक अव्यवस्था का निर्माण हो.

(7) आतंकवादी ऐसी परिस्थितियों के निर्माण का प्रयास करते है जिसमें जातीय, नृजातीय एवं धार्मिक संघर्षों को बढ़ावा दिया जाय जिससे भारत में अव्यवस्था फैले.

Scanned with CamScanner